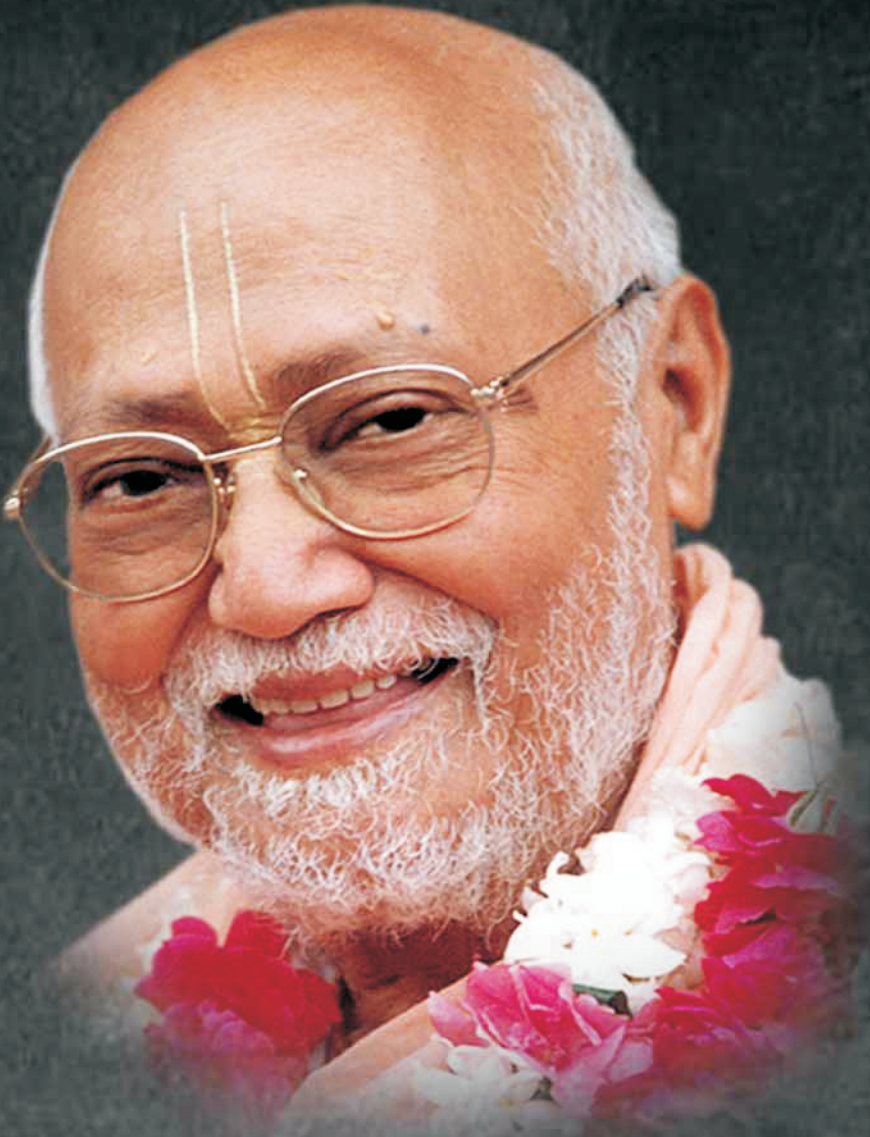


पावन जीवन चरित्र



श्रीश्रीमद् भक्ति दयित माधव गोस्वामी
महाराज जी का जीवन चरित्र



निखिल भारत श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ
प्रतिष्ठान के प्रतिष्ठाता,
नित्यलीला प्रविष्ट ॐ 108
श्री श्रीमद् भक्ति दयित माधव गोस्वामी
महाराज विष्णुपाद जी के
प्रियतम शिष्य, त्रिदण्डस्वामी
श्रीमद् भक्तिबल्लभ तीर्थ गोस्वामी महाराज
जी द्वारा सम्पादित

प्रथम खंड

भाग - 4

11 वर्ष की अवस्था में
गीता कण्ठस्थ

श्रीलगुरुदेव

श्रीश्रीगुरु गौरांगौ जयतः

श्रीगुरुदेव आदर्श मातृ-
भक्त थे। आपकी माता जी
आपको अपने पास बिठाकर
विभिन्न शास्त्र-ग्रन्थों का स्वयं
पाठ करती थीं एवं आपके द्वारा
भी पाठ कराती थी। इस प्रकार
वह धर्मपरायण माता, आपका
धर्म विषय में तथा ईश्वर
आराधना में उत्साह बढ़ाती रही।
नियमित रूप से प्रतिदिन गीता

पाठ करते-करते आपको 11 वर्ष की आयु में ही सारी गीता कण्ठस्थ हो गयी थी। श्रीगुरुदेव जी की शिक्षा काँचनपाड़ा ग्राम तथा भट्ट ग्राम में हुई। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए उसके बाद आप कलकत्ता आ गये। कलकत्ता आने पर आपके हृदय में भगवान के लिए विरह-व्याकुलता बहुत तीव्र हो गयी। आपके पूर्वाश्रम के सम्बन्धी श्रीनारायण मुखोपाध्याय आपको आपके कमरे में व्याकुलता से भगवान् को पुकारते हुए और रोते हुए देखा करते थे। उस

समय आप दिन में एक बार ही
खाना खाते थे और सब समय
भगवत्-चिन्तन में बिताते थे।





Play Store

SrilaGurudeva